शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

राजनांदगांव (छ.ग.)

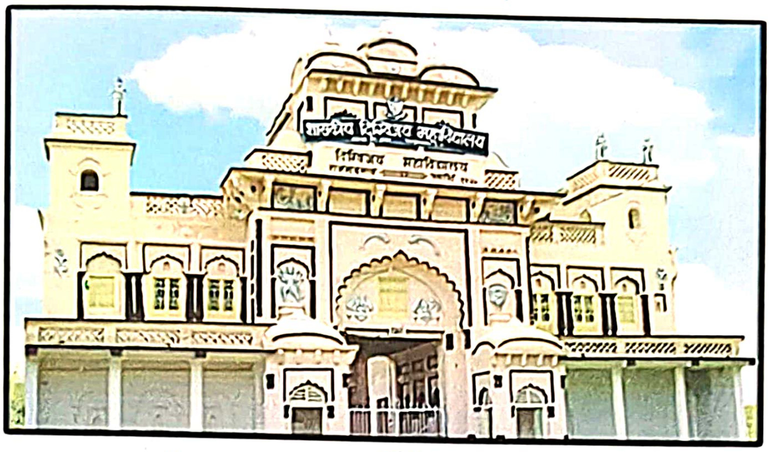

संस्कृत विभाग

वार्षिक प्रतिवेदन

सत्र - 2012-13

विद्या सर्वस्य भूषणम्

प्रभारी
डॉ. शंकर मुनि राय
सहायक प्राध्यापक - हिन्दी

प्राचार्य
डॉ आर.एन.सिंह

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

सत्र–2012–13

अतिथि व्याख्याता

कुमारी सुशीला केंवट
शैक्षणिक योग्यता– एम. ए. संस्कृत, 65.50 प्रतिशत
गोल्ड–मेडलिस्ट, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

जनभागीदारी व्याख्याता

1. श्री दामोदर मेश्राम
   शैक्षणिक योग्यता– एम. ए. संस्कृत, 63.50 प्रतिशत

2. कुमारी शिल्पी ठाकुर
   शैक्षणिक योग्यता– एम. ए. संस्कृत, 55.25 प्रतिशत

सत्र–2011–12 में नेट/सेट कोचिंग में शामिल कुल विद्यार्थियों की संख्या–23
नेट परीक्षा में शामिल विद्यार्थियों की संख्या–05
उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या– शून्य

संस्कृत साहित्य परिषद

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह की उपस्थिति में सत्र–2012–13 के लिए प्रावीण्य सूची के आधार पर संस्कृत साहित्य परिषद का गठन निम्नानुसार किया गया है–

प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह – संरक्षक
डॉ. शंकर मुनि राय – प्रभारी

1. कु. डालेश्वरी (एम. ए. अंतिम)– अध्यक्ष
2. कु. चंद्रप्रभा साहू (एम. ए. पूर्व)–उपाध्यक्ष
3. श्री पीलूराम साहू (एम. ए. अंतिम)–सचिव
4. कु. कविता साहू (एम. ए. पूर्व) –सहसचिव

संस्कृत एम. ए. पूर्व एवं अंतिम के सभी विद्यार्थी उक्त परिषद के स्थाई सदस्य मनोनीत किये गये।

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

संस्कृत विभाग

प्रतिवेदन–2012–13

संस्कृत साहित्य परिषद का गठन

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह की उपस्थिति में सत्र–2012–13 के लिए प्रावीण्य सूची के आधार पर संस्कृत साहित्य परिषद का गठन किया गया है। परिषद की अध्यक्ष कुमारी डालेश्वरी (एम. ए. अंतिम) कु. चंद्रप्रभा साहू (एम. ए. पूर्व) उपाध्यक्ष, श्री पीलूराम साहू (एम. ए. अंतिम) सचिव तथा कु. कविता साहू (एम. ए. पूर्व) को सहसचिव मनोनीत किया गया है।

संस्कृत एम. ए. पूर्व एवं अंतिम के सभी विद्यार्थी उक्त परिषद के स्थाई सदस्य मनोनीत किये गये हैं। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय परिषद के प्रभारी हैं।

संस्कृत में रोजगारपरक पाठ्यक्रम की योजना

इस अवसर पर प्राचार्य ने अपने संबोधन में सभी विद्यार्थियों का इस संस्था में स्वागत करते हुए उनकी पिछली सफलता पर बधाई दी। साथ ही आपने आगे कहा कि संस्कृत एक रोजगारपरक भाषा है। संभव है कि चिकित्सा विज्ञान और यांत्रिक शिक्षा से जुडे युवक कभी बेरोजगार हो जाएं, किन्तु संस्कृत का विद्यार्थी कभी बेरोजगार नही हो सकता। क्योंकि संस्कृत का संस्कार हमारे जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक जुड़ा हुआ है। अतः हमारा प्रयास होगा कि भविष्य में यहां संस्कृत विषय में रोजगारपरक पाठ्यक्रम प्रारंभ किये जाएं।

दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उदघाटन

इस सत्र में 10–20 अक्टूबर 2012 को आयोजित दस दिसवसीय 'संस्कृत संभाषण शिविर' का उद्घाटन छत्तीसगढ़ संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. गणेश कौशिक ने किया। इस अवसर पर आपने अपने संबोधन में कहा कि अगर हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और अन्य भारतीय भाषाएं मातृ भाषाएं हैं, तो संस्कृत हमारी नानी है। क्योंकि यह समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत के तत्सम शब्दों की भरमार है। शब्द भंडार की बात करें तो संस्कृत का भंडार ऐसा है कि सूर्य और विष्णु के लिए इसमें एक हजार पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख मिलता है। संस्कृत के विद्यार्थियों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय विद्यार्थियों के अध्ययन–चिंतन की गुणवत्ता के कारण ही कभी इस देश को विश्वगुरू कहा गया था।

इससे पूर्व प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने महाविद्यालय परिवार की ओर से उनका स्वागत करते हुए जानकारी दी कि महाविद्यालय में सबसे ज्यादा संख्या संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों की है। यहां सिर्फ एम. ए. में ही सौ विद्यार्थी हैं, जिनमें छात्राओं की संख्या ज्यादा है। प्राचार्य ने उनसे निवेदन किया कि यद्यपि यहां संस्कृत के स्थाई प्राध्यापक नहीं हैं, किन्तु महाविद्यालय में अतिथि और जनभागीदारी शिक्षको के सहयोग से अध्यापक कार्य कराया जा रहा है। आपने मंत्री के दर्जा प्राप्त श्री कौशिक से निवेदन किया कि अगर शासन इस संस्था को स्थाई प्राध्यापक की व्यवस्था करे तो हमारी गुणवत्ता में वृद्धि संभव है।

संस्कृतमय रहा समापन समारोह

दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन माननीय श्री खूबचंदजी पारख, उपाध्यक्ष 20सूत्रीय कार्यक्रम कियान्वयन समिति के मुख्य आतिथ्य तथा डोंगरगढ़ विधायक एवं जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री रामजी भारती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी, प्रांताध्यक्ष संस्कृत भारती तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मुकुंद हेम्बर्डे उपस्थित थे। लगभग दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन पूरी तरह से संस्कृत में हुआ। प्रशिक्षणार्थियों में कुमारी नसीमा बानो तथा दामोदर मेश्राम ने भी अपने अनुभव संस्कृत में ही सुनाये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री खूबचंद पारख ने कहा कि संस्कृत भाषा हिन्दी से अलग जरूर है किन्तु दोनो की लिपि देवनागरी ही है। यह हमारी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखनेवाली भाषा है। कार्यक्रम के विशेष अतिथि संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए भगवतगीता से अच्छी कोई पुस्तक नहीं है। आपने संस्कृत के महत्व को बताते हुए कहा कि यह हमारी जीवन पद्धति को संवारने वाली भाषा है। शिविर के विद्यार्थियों से अंतरंग बातें करते हुए आपने प्राचार्य के कार्यो की सराहना की।

संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. शंकरमुनि राय ने अपने संबोधन मे कहा कि संस्कृत को सिर्फ धार्मिक तथा कर्मकांड की भाषा समझने की धारणा गलत है। इस भाषा में लिखे हुए कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसा नीतिपरक ग्रंथ अन्यत्र दुर्लभ है। आर्यभट्ट द्वारा किया गया शून्य का आविष्कार एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। डॉ. राय तथा श्री बंशीधर द्विवेदी ने पूरी तरह संस्कृत में मंच संचालित करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिये। संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने डॉ. राय के संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा करते हुए महाविद्यालय के विभागीय अतिथि डायरी में अलग से उल्लेख किया है।

संस्कृत में भाषण के लिए नसीमा बानो पुरस्कृत

दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर के समापन समारोह में विभाग की छात्रा नमा बानों ने संस्कृत में अपने विचार व्यक्त किये। उसके संस्कृत वक्तव्य से प्रभावित होकर समारोह के विशेष अतिथि संत श्री काशीनाथ चतुर्वेदी और अध्यक्ष श्री खूबचंद पारख नें उसे प्रशस्तिप पत्र प्रदान कर पुरस्कृत किये। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के अनुसार इस शिविर में कुल 50 चयनित विद्यार्थियों को शामिल किया गया था जिसमें छात्राओं की संख्या अधिक थी। यह शिविर संस्कृत भारती, रायपुर के सहयोग से आयोजित था। इस शिविर में प्रशिक्षक के रूप में श्री बंशीधर द्विवेदी और राकेश कुमार वर्मा ने लगन के साथ प्रशिक्षण देकर सहयोग प्रदान किये।

मंत्रोच्चार के साथ शुरू होती हैं कक्षाएं

महाविद्यालय में संस्कृत में एम. ए. की पढ़ाई करनेवाले विद्यार्थियों की संख्या सौ से अधिक है। विगत चार सत्रों से यहां नियमित प्राध्यापक नहीं होने की स्थिति में जनभागीदारी के सहयोग से प्रध्यापक नियुक्त कर अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। संस्कृत की कक्षाएं मंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ होती हैं। विगत चार सत्रों से इस विषय का परीक्षा परिणाम लगभग शतप्रतिशत होने से यह विषय विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

शिक्षक–पालक सम्मेलन सम्पन्न

विभाग में पालक–शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। छात्र–छात्राओं की उपस्थिति में अभिभावकों और शिक्षकों नें एक दूसरे की बातों को ध्यानपूर्वक सुना तथा महाविद्यालयीन महौल को बेहतर बनाने के लिए एक–दूसरे को सहयोग प्रदान करने के वचन दिये।

सम्मेलन के प्रारंभ में विभाग के प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय ने अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि महाविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है कि अभिभावक गण शिक्षकों के सम्पर्क में रहें तथा अपने पाल्य की हर गतिविधि का मूल्यांकन करते रहें। प्रतियोगितापूर्ण वैश्विक परिवेश में हर विद्यार्थी आज तनाव की स्थिति में पढ़ाई कर रहा है। ऐसे में जरूरी है कि अभिभावक और शिक्षक उसकी समस्याओं को गंभीरता से समझें और उसे तनावमुक्त रखने का प्रयास करें। आपने अभिभावकों को अपने तथा

शिक्षकों के मोबाईल नम्बर नोट करवाये तथा कहा कि जब कभी जरूरत हो, आप अपने पाल्य की प्रगति की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। आपने विद्यार्थियों से अपील की कि वे खाली समय में ग्रंथालय का लाभ उठायें।

कार्यक्रम में प्रत्येक विद्यार्थी को बोलने का अवसर दिया गया तथा अपने पालकों और शिक्षकों के बीच समस्याएं रखने को कहा गया। सभी विद्यार्थियों ने महाविद्यालय के शैक्षणिक माहौल की सराहना की तथा ऐसी संस्था में पढ़ते हुए स्वयं को गौरवान्वित बताया। जो विद्यार्थी दूसरी संस्थाओं से पढ़कर यहां आये हैं, उन्होंने यहां के अनुशासन की सराहना की। अभिभावकों ने कहा कि वे अपने पाल्य की शैक्षणिक प्रगति से संतुष्ट हैं तथा चाहते हैं कि वे महाविद्यालय की गरिमा को आगे बढ़ायें।

....

शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छ.ग.)
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन
संस्कृतमय रहा आयोजन

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन माननीय श्री खूबचंदजी पारख, उपाध्यक्ष 20सूत्रीय कार्यक्रम कियान्वयन समिति के मुख्य आतिथ्य तथा डोंगरगढ़ विधायक एवं जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री रामजी भारती की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी, प्रांताध्यक्ष संस्कृत भारती तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मुकुंद हेम्बर्डे उपस्थित थे। लगभग दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन पूरी तरह से संस्कृत में हुआ। प्रशिक्षणार्थियों में कुमारी नसीमा बानो तथा दामोदर मेश्राम ने भी अपने अनुभव संस्कृत में ही सुनाये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री खूबचंद पारख ने कहा कि संस्कृत भाषा हिन्दी से अलग जरूर है किन्तु दोनो की लिपि देवनागरी ही है। यह हमारी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखनेवाली भाषा है। यह ऐसी भाषा है जो हमें नकारात्मक सोच से मुक्ति दिलाती है। हम चाहे जिस किसी भाषा–संस्कृति के हों, हमारे सारे संस्कार इसी भाषा के माध्यम से संपन्न होते हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय रामजी भारती ने संस्कृतमय कार्यक्रम से प्रेरित होकर कहा कि वे भी इसे अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में अपनाने का प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए भगवतगीता से अच्छी कोई पुस्तक नहीं है। आपने संस्कृत के महत्व को बताते हुए कहा कि यह हमारी जीवन पद्धति को संवारने वाली भाषा है। शिविर के विद्यार्थियों से अंतरंग बातें करते हुए आपने प्राचार्य के कार्यों की सराहना की।

संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. शंकरमुनि राय ने अपने संबोधन मे कहा कि संस्कृत को सिर्फ धार्मिक तथा कर्मकांड की भाषा समझने की धारणा गलत है। इस भाषा में लिखे हुए कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसा नीतिपरक ग्रंथ अन्यत्र दुर्लभ है। आर्यभट्ट द्वारा किया गया शून्य का आविष्कार एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। डॉ. राय तथा श्री बंशीधर द्विवेदी ने पूरी तरह संस्कृत में मंच संचालित करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिये। संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने डॉ. राय के संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा करते हुए महाविद्यालय के विभागीय अतिथि डायरी में अलग से उल्लेख किया है।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि जर्मनी में जहां संस्कृत के प्रति विशेष रूचि बढ़ रही है, वही भारत में इसकी उपेक्षा होना हमारे भविष्य के लिए उचित नहीं होगा। उन्होंने महाविद्यालय के संस्कृत विषय में रोजगारपरक शिक्षा–व्यवस्था के लिए स्वयं को तैयार करने की इच्छा जताई।

....

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन

संस्कृतमय रहा आयोजन

महाविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन माननीय श्री खूबचंदजी पारख, उपाध्यक्ष 20सूत्रीय कार्यक्रम कियान्वयन समिति के मुख्य आतिथ्य तथा डोंगरगढ़ विधायक एवं जनभागीदारी समिति अध्यक्ष श्री रामजी भारती की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी, प्रांताध्यक्ष संस्कृत भारती तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मुकुंद हेम्बर्डे उपस्थित थे। लगभग दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन पूरी तरह से संस्कृत में हुआ। प्रशिक्षणार्थियों में कुमारी नसीमा बानो तथा दामोदर मेश्राम ने भी अपने अनुभव संस्कृत में ही सुनाये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री खूबचंद पारख ने कहा कि संस्कृत भाषा हिन्दी से अलग जरूर है किन्तु दोनो की लिपि देवनागरी ही है। यह हमारी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखनेवाली भाषा है। यह ऐसी भाषा है जो हमें नकारात्मक सोच से मुक्ति दिलाती है। हम चाहे जिस किसी भाषा–संस्कृति के हों, हमारे सारे संस्कार इसी भाषा के माध्यम से संपन्न होते हैं। कार्यकम के अध्यक्ष माननीय रामजी भारती ने संस्कृतमय कार्यकम से प्रेरित होकर कहा कि वे भी इसे अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में अपनाने का प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए भगवतगीता से अच्छी कोई पुस्तक नहीं है। आपने संस्कृत के महत्व को बताते हुए कहा कि यह हमारी जीवन पद्धति को संवारने वाली भाषा है। शिविर के विद्यार्थियों से अंतरंग बातें करते हुए आपने प्राचार्य के कार्यों की सराहना की।

संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. शंकरमुनि राय ने अपने संबोधन मे कहा कि संस्कृत को सिर्फ धार्मिक तथा कर्मकांड की भाषा समझने की धारणा गलत है। इस भाषा में लिखे हुए कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसा नीतिपरक ग्रंथ अन्यत्र दुर्लभ है। आर्यभट्ट द्वारा किया गया शून्य का आविष्कार एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। डॉ. राय तथा श्री बंशीधर द्विवेदी ने पूरी तरह संस्कृत में मंच संचालित करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिये। संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने डॉ. राय के संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा करते हुए महाविद्यालय के विभागीय अतिथि डायरी में अलग से उल्लेख किया है।

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में कहा कि जर्मनी में जहां संस्कृत के प्रति विशेष रूचि बढ़ रही है, वही भारत में इसकी उपेक्षा होना हमारे भविष्य के लिए उचित नहीं होगा। उन्होंने महाविद्यालय के संस्कृत विषय में रोजगारपरक शिक्षा–व्यवस्था के लिए स्वयं को तैयार करने की इच्छा जताई।

....

दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का उदघाटन

'संस्कृत हमारी नानी है' **कहा संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष ने**

अगर हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और अन्य भारतीय भाषाएं मातृ भाषाएं हैं, तो संस्कृत हमारी नानी है। क्योंकि यह समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत के तत्सम शब्दों की भरमार है। शब्द भंडार की बात करें तो संस्कृत का भंडार ऐसा है कि सूर्य और विष्णु के लिए इसमें एक हजार पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख मिलता है। यह विचार छत्तीसगढ़ संस्कृत बोर्ड के अध्यक्ष श्री गणेश कौशिक ने शासकी दिग्विजय महाविद्यालय में व्यक्त की। वे यहां संस्कृत विभाग द्वारा संचालित दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर में प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर संस्कृत के विद्यार्थियों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय विद्यार्थियों के अध्ययन–चिंतन की गुणवत्ता के कारण ही कभी इस देश को विश्वगुरू कहा गया था।

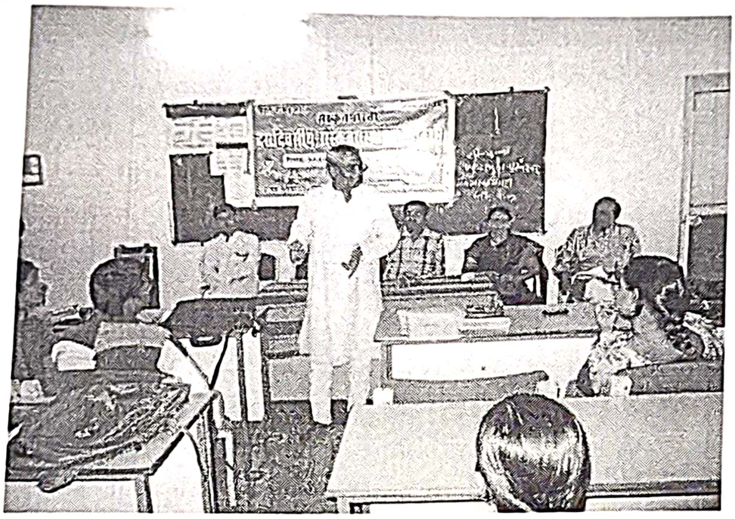

इससे पूर्व प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने महाविद्यालय परिवार की ओर से उनका स्वागत करते हुए जानकारी दी कि महाविद्यालय में सबसे ज्यादा संख्या संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियों की है। यहां सिर्फ एम. ए. में ही सौ विद्यार्थी हैं, जिनमें छात्राओं की संख्या ज्यादा है। प्राचार्य ने उनसे निवेदन किया कि यद्यपि यहां संस्कृत के स्थाई प्राध्यापक नहीं हैं, किन्तु महाविद्यालय में अतिथि और जनभागीदारी शिक्षको के सहयोग से अध्यापक कार्य कराया जा रहा है। आपने मंत्री के दर्जा प्राप्त श्री कौशिक से निवेदन किया कि अगर शासन इस संस्था को स्थाई प्राध्यापक की व्यवस्था करे तो हमारी गुणवत्ता में वृद्धि संभव है।

उल्लेखनीय है कि महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भारती के सहयोग से दस दिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर संचालित है। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय और प्रशिक्षक द्वै श्री बंशीधर द्विवेदी तथा राकेश वर्मा द्वारा छात्र–छात्राओं को संस्कृत का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संस्कृतमय रहा समापन समारोह

दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का समापन माननीय श्री खूबचंदजी ारख, उपाध्यक्ष 20सूत्रीय कार्यक्रम कियान्वयन समिति के मुख्य आतिथ्य तथा डोंगरगढ़ विधायक एवं जनभागीदारी ामिति अध्यक्ष श्री रामजी भारती की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में संतश्री काशीनाथ तुर्वेदी, प्रांताध्यक्ष संस्कृत भारती तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के निदेशक डॉ. मुकुंद हेम्बर्डे उपस्थित थे। गभग दो घंटे तक चले इस कार्यक्रम का संचालन पूरी तरह से संस्कृत में हुआ। प्रशिक्षणार्थियों में कुमारी नसीमा नो तथा दामोदर मेश्राम ने भी अपने अनुभव संस्कृत में ही सुनाये।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री खूबचंद पारख ने कहा कि संस्कृत भाषा हिन्दी से अलग जरूर है किन्तु दोनो की लिपि देवनागरी ही है। यह हमारी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित रखनेवाली भाषा है। यह ऐसी भाषा है जो हमें नकारात्मक सोच से मुक्ति दिलाती है। हम चाहे जिस किसी भाषा–संस्कृति के हों, हमारे
सारे संस्कार इसी भाषा के माध्यम से संपन्न होते हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय रामजी भारती ने संस्कृतमय कार्यक्रम से प्रेरित होकर कहा कि वे भी इसे अपनी बोलचाल की भाषा के रूप में अपनाने का प्रयास करेंगे।

कार्यक्रम के विशेष अतिथि संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए भगवतगीता से अच्छी कोई पुस्तक नहीं है। आपने संस्कृत के महत्व को बताते हुए कहा कि यह हमारी जीवन पद्धति को संवारने वाली भाषा है। शिविर के विद्यार्थियों से अंतरंग बातें करते हुए आपने प्राचार्य के कार्यों की सराहना की।

संस्कृत विभाग के प्रभारी डॉ. शंकरमुनि राय ने अपने संबोधन मे कहा कि संस्कृत को सिर्फ धार्मिक तथा कर्मकांड की भाषा समझने की धारणा गलत है। इस भाषा में लिखे हुए कौटिल्य के अर्थशास्त्र जैसा नीतिपरक ग्रंथ अन्यत्र दुर्लभ है। आर्यभट्ट द्वारा किया गया शून्य का आविष्कार एक वैज्ञानिक उपलब्धि है। डॉ. राय तथा श्री बंशीधर द्विवेदी ने पूरी तरह संस्कृत में मंच संचालित करते हुए श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिये। संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने डॉ. राय के संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा करते हुए महाविद्यालय के विभागीय अतिथि डायरी में अलग से उल्लेख किया है।

संस्कृत में रोजगारपरक पाठ्यक्रम की योजना

शिविर के उद्घाटन अवसर पर प्रचार्य डॉ. आर. एन. सिंह ने कहा कि संस्कृत एक रोजगारपरक भाषा है। संभव है कि चिकित्सा विज्ञान और यांत्रिक शिक्षा से जुडे युवक कभी बेरोजगार हो जाएं, किन्तु संस्कृत का विद्यार्थी कभी बेरोजगार नही हो सकता। क्योंकि संस्कृत का संस्कार हमारे जन्म से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक जुड़ा हुआ है। अतः हमारा प्रयास होगा कि भविष्य में यहां संस्कृत विषय में रोजगारपरक पाठ्यक्रम प्रारंभ किये जाएं।

मंत्रोच्चार के साथ शुरू होती हैं कक्षाएं

उल्लेखनीय है कि दिग्विजय महाविद्यालय में संस्कृत में एम. ए. की पढ़ाई करनेवाले विद्यार्थियों की संख्या सौ से अधिक है। विगत चार सत्रों से यहां नियमित प्राध्यापक नहीं होने की स्थिति में जनभागीदारी के सहयोग से प्रध्यापक नियुक्त कर अध्यापन कार्य कराया जा रहा है। संस्कृत की कक्षाएं मंत्रोच्चार के साथ प्रारंभ होती हैं। विगत चार सत्रों से इस विषय का परीक्षा परिणाम लगभग शतप्रतिशत होने से यह विषय विद्यार्थियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है।

डालेश्वरी संस्कृत साहित्य परिषद की अध्यक्ष मनोनीत

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राचार्य डॉ. आर. एन. सिंह की उपस्थिति में सत्र–2012–13 के लिए प्रावीण्य सूची के आधार पर संस्कृत साहित्य परिषद का गठन किया गया है। परिषद की अध्यक्ष कुमारी डालेश्वरी (एम. ए. अंतिम) कु. चंद्रप्रभा साहू (एम. ए. पूर्व) उपाध्यक्ष, श्री पीलूराम साहू (एम. ए. अंतिम) सचिव तथा कु. कविता साहू (एम. ए. पूर्व) को सहसचिव मनोनीत किया गया है।

संस्कृत एम. ए. पूर्व एवं अंतिम के सभी विद्यार्थी उक्त परिषद के स्थाई सदस्य मनोनीत किये गये हैं। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय परिषद के प्रभारी हैं।

संस्कृत पढ़ने में लड़कियां आगे

छ. ग. प्रदेश में संस्कृत के अध्ययन के प्रति छात्राओं की रूचि बढ़ रही है। इसका उदाहरण शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव में देखने को मिला। यहां संस्कृत विभाग द्वारा 10 से 20 अक्टूबर 2012 तक दसदिवसीय संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन किया गया था। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के अनुसार इसमें कुल 50 चयनित विद्यार्थियों को शामिल किया गया था जिसमें छात्राओं की संख्या

अधिक थी। संस्कृत भारती के सहयोग से आयोजित इस समारोह को डॉ. गणेश कौशिक, अध्यक्ष एवं सहायक संचालिका डॉ. कल्पना द्विवेदी संस्कृत बोर्ड, छत्तीसगढ, डॉ. मुकुंद हेम्बर्डे, निदेशक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर, संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी, प्रांताध्यक्ष संस्कृत भारती छ. ग., प्रांतीय संघ प्रचारक श्री दीपकजी सहित डोंगरगढ़ विधायक माननीय श्री रामजी भारती ने संबोधित किया। समारोह के मुख्य अतिथि माननीय खूबचंद पारख, उपाध्यक्ष 20 सूत्रीय कार्यक्रम कियान्वयन समिति थे।

संस्कृत एम ए की छात्रा नसीमा बानो को मिला प्रमाण पत्र

प्राचार्य डॉ. आर एन सिंह ने अपने स्वागत संबोधन में बताया कि संस्था में सिर्फ स्नातकोत्तर संस्कृत में सौ विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। इनमें छात्राओं की संख्या अधिक है। विभागीय प्रभारी डॉ. शंकर मुनि राय के अनुसार कुमारी अफशाना और नसीमा बानों स्नातकोत्तर संस्कृत की प्रतिभाशाली छात्राएं हैं। समापन समारोह में नसीमा बानो ने जब पूरी तरह से संस्कृत में ही अपने अनुभव सुनाये तो श्रोताओं को आश्चर्य का ठिकाना नही था। संतश्री काशीनाथ चतुर्वेदी ने नसीमा के संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा की तथा अपने हाथों से उसे प्रमाण पत्र दिये। डॉ. शंकर मुनि राय तथा श्री बंशीधर द्विवेदी ने मंत्रोच्चार के साथ कार्यकम का संचालन पूरी तरह संस्कृत में किया।